संदर्भ सूचि

	लेखक	ग्रंथ	पृष्ठ क्रमांक
१	डॉ.भगीरथ मिश्र	काव्यशास्त्र	८१ ।
२	यशपाल	अमिता	३६ ।
३	वही	वही	११२ ।
४	वही	वही	१० ।
५	वही	वही	२२३ ।

षष्ठ अध्याय

' अमिता ' उपन्यास की भाषा शैली ---

प्रत्येक साहित्य विधा की अपनी विशेषता होती है और अपने अपने गुण भी है। किसी भी विचार, भावना, या सिध्दान्त को भाषाबध्द कर देने से उसे साहित्य की कोटि में नहीं रखा जा सकता। साहित्य विचार या भावना को ही अभिव्यक्ति नहीं देता उसे कलात्मक रूप भी देता है। ऐसा करने के लिए विशेष शिल्प अपनाता है उस शिल्प को अंग्रेजी में टेकनिक कहते हैं।

शैली के सम्बन्ध में इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है जितनी स्वाभाविक अर्थात पात्रानुकूल और स्थिति के अनुरूप शैली होगी उतना ही उसका प्रभाव पड़ेगा। भगीरथ मिश्र कहते हैं --

' उपन्यास की शैली संक्षिप्तात्मक न होकर विकृतात्मक होती है क्योंकि उसे पूर्ण वातावरण और उसमें रस और भावों की सृष्टि करनी होती है।'[१]

अत: पात्र की शिक्षा, संस्कृति और मानसिक धरातल के अनुरूप ही उसकी भाषा होनी चाहिए इसके लिए पाण्डित्यपूर्ण, व्यंग्यमुक्त भाषा से लेके ठेठ प्रादेशिक और ग्राम्य भाषा तक का प्रयोग यथावश्यक रूप में किया जाता है। शैली के सम्बन्ध में सामान्य रूप से ये बाते ध्यान में रखनेपर भी एक उपन्यासकार की शैली दूसरे से भिन्न होती है। प्रत्येक का अपना निजी अनुभव क्षेत्र, वातावरण, संस्कार एवं शिक्षा होती है। अत: जीवन को देखने और चित्रित करने के अपने निजी ढंग है।

अपना मनोभाव दूसरों तक पहुँचाने के लिए साहित्यकार के पास भाषा का ही एकमात्र साधन है। अपनी अनुभूतियों और मनोभावों को प्रभावशाली रूप में

व्यक्त करने के लिए वह कही चित्रों की कहीं लययुक्त शब्द योजना की और कहीं गंभीर समर्थभाषा की सहायता लेता है।

यशपाल ने अपने उपन्यासों में एक ओर देशकाल वातावरण तथा परिस्थिति के अनुसार भाषा का प्रयोग किया है। उपन्यासों में विश्वसनीयता एवं स्वाभाविकता को निर्माण किया है। उनकी भाषा में लालित्य, मधुरता एवं काव्यात्मकता लाने के लिए उन्होंने मुहावरों, कहावतों, सुक्तियों तथा अलंकृत वाक्य रचना का प्रयोग किया है। यशपालजी भाषा को अपना साधन बनाकर भिन्न - भिन्न तरह से उसका प्रयोग करते हैं । इस उपन्यास में भाषागत विशेषताएँ इस प्रकार मिलती हैं।

१) कथोपकथन शैली का प्रयोग --
२) विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग -
३) नाटकीय शैली, का प्रयोग -
४) पात्रानुकूल भाषाशैली का प्रयोग -
५) व्यंग्यात्मक शैलीका प्रयोग।

यशपाल जीने ` अमिता ` में जनसाधारण की भाषा का प्रयोग किया है। पात्रों के संवादों में कथोकथन शैली का प्रयोग किया गया है। पात्रानुकूल संवाद बोलचाल की भाषा में ही है। कहीं भी संस्कृत भाषा तथा अन्य भाषाओंका प्रयोग नहीं किया। पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग उपन्यास की भाषा को यथार्थवादी बनता है।

राज्य में उत्सव मनानेका इरादा किया जाता है लेकिन बौध्द भिक्षु राज्य की रक्षा करने के लिए यह उत्सव नहीं होने देना चाहते है, क्योंकि इसमें पशुबलि है। इस समय भिक्षुओंका राज्य में अपमान किया जाता है - तब महारानी से बातचीत करते हुये हमें नाटकीयता दिखाई देती है --

महारानी मौन रह कर जीवक की ओर देखती रही और कातर स्वर में बोली --

" मन्ने अभयदान दें। आश्वासन दे कि तथागत की शरण में आततायी के

आक्रमण से राज्य की रक्षा होगी ।' [२]

व्यंग्यात्मक शैली का भी प्रयोग इस उपन्यास में किया है भिक्षु भिक्षा माँगने के लिए ग्राम में जाते है । मद से उन्माद ग्राम के लोग विनोद में भर्त्सना निर्माण करते हुये भिक्षुओंको उद्देश्यकर कहते हैं --

' अभी बहुत है मटकी में,इन मुंडियों को भी पिलाओं ।' [३]

अपने उपन्यास को ऐतिहासिकता तथा कलागत संस्कृत भाषा का ध्यान रखकर यशपाल ने एक कर्मकार की तरह कार्य किया हैं ।' अमिता ' जैसा ऐतिहासिक उपन्यास सुक्तियों का खजाना ' बन गया है । वाक्य रचना में उपमा,वक्रोक्ति, रूपक तथा दृष्यन्तों के प्रयोग करके भाषा को काव्यमय एवं भावुक बनाया हैं ।

यथार्थवादी साहित्यकार यशपाल जी ने जनभाषा का समर्थन किया है । अपनी भाषा को जीवन्त बनाने के लिए उन्होंने लक्षपूर्वक विभिन्न स्तरों के भाषा का चयन किया है । व्यापक अध्ययन एवं उनके गुणों तथा अनुभवों के कारण ही खडीबोली के सीमित बंधनों से बन्धे नहीं गये किन्तु उदारतापूर्वक अन्य भाषाओं के शब्द ग्रहण किए हैं ।

' दिव्या ' ,' अमिता ' उपन्यासों में तत्सम शब्दों की प्रधानता हैं । ऐतिहासिक वातावरण होने की वजह से उनको अनेक बौध्दकालीन शब्दावली का प्रयोग करना पडा हैं । अमिता के रंग-रूप केचित्रण करते समय संस्कृत गर्भित शैली का प्रयोग किया हैं । अमिता में सुषप्त,वीथी,कपोत,तप:कीर्ति,निर्वाक,दुदान्त आदि प्रचलित तत्सम शब्दोंका प्रयोग किया है । इस प्रकार संस्कृत गर्भित भाषा के कारण यह रचना प्रभावशाली बन गई हैं ।

सुक्तियों के प्रयोग से भाषा प्रभावशाली बनती हैं । यशपाल के उपन्यासों में काल के अनुसार भाषा रूपों का जो प्रयोग हुआ है वह समन्वित भाषा के उदाहरण है ।' अमिता ' ,' दिव्या ' ये उपन्यास ऐसे उपन्यासों के कोटी से लिए गए है, जो कालविशेष के व्यक्तित्व को लिए हुए हैं । इन्हीं उपन्यासों में

खडीबोली तथा संस्कृत प्रचुरता का अधिक्य दिखाई देता है। जैसे --

" मन्ते नगर में बलि हिंसा की योजनाओं का ही यह कुप्रभाव है। मन्ते, यह तो अभी पाप की छायामात्रा है। जब नित्य सहस्त्र पशुओं का रक्त और सहस्त्र-सहस्त्र कलश मदिरा के बहेंगे तब इस राज्य और नगर में रसातल तक खोजने से भी धर्म न मिलेगा। तब हिंसा और पाप से दु:खी होने वाले भिक्षु इस राज्य में कैसे निवास कर पायेंगे ?" [४]

उपयुक्त उध्दरणों के जरिए यह पता लगता हैकि संस्कृत प्रचुर भाषा को भी युग विशेष का रूप देकर लेखक ने निरीक्षण एवं अध्ययन की गहराई को सिध्द किया है।

`दिव्या` तथा `अमिता` की शैली में बहुत साम्य दिखाई देता है किन्तु `अमिता` की भाषा शैली दिव्या से सरल है।`दिव्या` में बौध्दकाल का वातावरण चित्रित करने के लिए उन्होंने संस्कृत के तत्सम और अर्द्धतत्सम शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। जिससे दिव्या की भाषा बोझिल तथा कृत्रिम बन गयी है।`अमिता` की भाषा इस दृष्टिसे देखि गई तो अधिक संतुलित तथा प्रौढ कही जा सकती है। इसमें भाषा की बोझिलता और वैचारिक दुरुहता नहीं है।

`दिव्या` की भाँति `अमिता` की भाषा भी साहित्यिक, परिष्कृत और परिनिष्ठित है। उसमें साधारण वर्ग की बोलचाल नहीं है। दास-दासी भी आदरसूचक तथा अभिजात वर्ग की भाँति भाषा का प्रयोग करते है।" अमिता " की शैली की एक महत्वपूर्ण विशेषता है वह है` नाटकीयता` । कथानक सर्वत्र कथोपकथनों द्वारा ही आगे बढता है। ये संवाद अवसरानुकुल, रोचक तथा पात्रानुकुल है। कहीं-कहीं कोई पात्र अपना कथन पूर्ण करने पहले ही दूसरा पात्र बिच में बोलता है। इस प्रकार के वर्णन नाटकीय तत्व के अंदर आते है। जैसे ---

" महामात्थ ने महारानी से कहा --

" परम भगवती, आततायी के सम्मुख सिर झुकाकर अपना स्वत्व छोड देना मनुष्य का धर्म नहीं है, यह कदर्थ है।... आचार्य का भी कोई परिग्रह नहीं है। उसके लिए एक लोटा और चटाईही पर्याप्त है। शरीर का भी मोह अब नहीं है। परन्तु

कलिंग की मर्यादा की रक्षा करना उसका धर्म है। आ.की प्रार्थना है कि जैसे पुण्यस्मृति महाराज और महाराज के पिता ने सेवक का विश्वास किया था, वैसे ही अन्नदाता भी करें। सेवक के सेवाकर्तव्य में बाधा न डालो। [४]

मद्रकीर्ति और महामात्थ का विचार विमर्श, महारानी और आचार्य का वार्तालाप, महारानी और महास्थविर का दृश्य, मोद और हिता, हिता और 'अमिता' का परस्पर प्रेम, अशोक आक्रमण के समय कलिंग, नगर की परिस्थितिका दृश्य आदि सभी स्थल अत्यन्त नाटकीय हैं।

अमिता की भाषा साहित्यिक होने के कारण संस्कृत शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ है लेकिन ये शब्द कहीं भी अर्थ की दृष्टिसे बोझिल नहीं बने। 'रजत-मंजुषा, ताम्बूल, चीवर, कार्षापण' आदि शब्द ऐतिहासिक वातावरण प्रस्तुत करने में प्रयुक्त हुए हैं।

'अमिता' में महारानी के कथन और वाद-विवादों में उपदेशात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। महारानी के उपदेश कान्ता-सम्मित उपदेश के समान मधुर जान पडते है। वार्तालापों में राजवंश के उच्चवर्ग के लोग स्त्री और पुरुष बहु-वचन 'हम' का प्रयोग करते है और दास-दासी एक वचन का। बालक भी बहुवचन का प्रयोग करते हैं। 'अमिता' की भाषा में सरलता और चंचलता है।

हास्य, व्यंग्य, वक्रोक्ति और आक्रोश यशपाल की भाषा शैली की एक अनन्य साधारण विशेषता है। विचारशील पात्रों के कथोपकथन गंभीर और क्लिष्ठता का आभास देते हैं। नपे-तुले शब्दों के द्वारा बोलचाल की भाषा में विचारों की अभिव्यक्ति की है, जो जन-साधारण के लिए ग्राह्य है, उनकी भाषा-शैली सरल, सहज, सशक्त तथा प्रभावशाली है।

निष्कर्ष —

यशपाल जी ने अनेक शैलीयोंका प्रयोग अमिता उपन्यास में किया है। शैलीयोंका प्रयोग करते हुये उन्होंने भाषा का भी ख्याल रखा है। नाटकीय शैली

का प्रयोग हर एक जगह दिखाई देता है। कथोपकथन शैलीका प्रयोग उन्होंने पात्रों के अनुसार किया है। यशपाल जी ने अलंकारोंका भी प्रयोग किया है।

यशपाल जी ने पण्डित्यपूर्ण, व्यंग्यात्मक भाषा से लेकर प्रादेशिक भाषा तक का प्रयोग यथावश्यक रूप में किया है। उत्सव का वर्णन तथा अंबिता के राज्यतिलका का वर्णन सुसबध्द रीतिसे किया है। पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग में तत्सम शब्दोंको इस्तमाल किया है। उन्होंने इस उपन्यास में एक विशेष शिल्प जिसे अंग्रेजी में टेकनिक कहते उसे अपनाया है।

समन्वित सामान्य, संस्कृत प्रचुर आदि विभिन्न रूपों में भाषा तत्व की सृष्टि कर मुहावरों, अलंकारों, कहावतों के प्रयोग से उपन्यास की भाषागत सुषमा निर्माण की है। संस्कृत तत्सम, तद्भव एवं आंचलिक भाषाओंका प्रयोग लेखक के भाषाज्ञान का परिचय देते हैं। भाषा का बहुमुखी प्रयोग यशपाल के उपन्यासों की महान उपलब्धि है। ऐतिहासिक उपन्यासों में संस्कृत प्रचूर भाषा का रूप यशपाल द्वारा हिन्दी उपन्यास साहित्य की महान देन है।